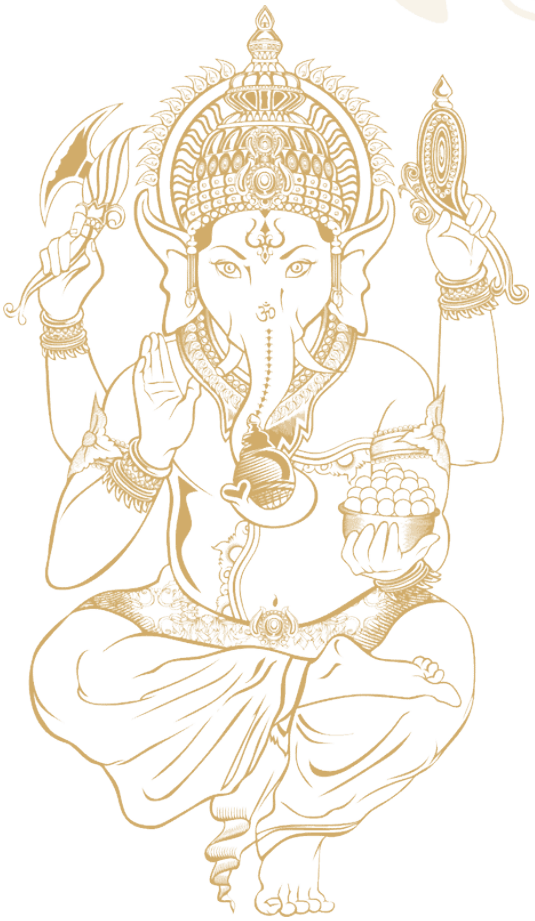

Ms.

17 Aug 2025

11:58 AM

Kathmandu

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119156201**

तिथि 17/08/2025 **समय** 11:58:00 **वार** रविवार **स्थान** Kathmandu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:58
अक्षांश 27:05:00 उत्तर **रेखांश** 85:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 86:15:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	09:36:48 घं
वेलान्तर	00:04:05 घं
सूर्योदय	05:37:01 घं
सूर्यास्त	18:39:59 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	भाद्रपद
पक्ष	कृष्ण
तिथि	9
नक्षत्र	रोहिणी
योग	व्याघात
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वा-वाणी
पाया(रा.-न.)	लौह-स्वर्ण
होरा	मंगल
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

चन्द्र 6वर्ष 10मा 13दि

चन्द्र

17/08/2025
01/07/2032

	00/00/0000
	00/00/0000
	17/08/2025
गुरु	30/09/2026
शनि	01/05/2028
बुध	30/09/2029
केतु	01/05/2030
शुक्र	31/12/2031
सूर्य	01/07/2032

योगिनी

सिद्धा 4वर्ष 9मा 21दि

सिद्धा

17/08/2025
09/06/2030

	17/08/2025
संकटा	09/05/2026
मंगला	19/07/2026
पिंगला	08/12/2026
धान्या	09/07/2027
भ्रामरी	18/04/2028
भद्रिका	09/04/2029
उल्का	09/06/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:24:13	तुला	विशाखा	2	गुरु	शनि	---	0:00			
सूर्य			00:23:39	सिंह	मघा	1	केतु	केतु	मूलत्रिकोण	2.38	कलत्र	पितृ	वध
चंद्र			14:10:21	वृष	रोहिणी	2	चंद्र	गुरु	मूलत्रिकोण	1.18	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			12:14:27	कन्या	हस्त	1	चंद्र	राहु	शत्रु राशि	1.12	मातृ	भ्रातृ	जन्म
बुध			12:07:03	कर्क	पुष्य	3	शनि	मंगल	शत्रु राशि	1.04	पुत्र	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु			20:51:36	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.20	अमात्य	धन	क्षेम
शुक्र			25:46:28	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	मित्र राशि	1.25	आत्मा	कलत्र	क्षेम
शनि	व		06:43:30	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	0.99	ज्ञाति	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		24:20:39	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		24:20:39	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

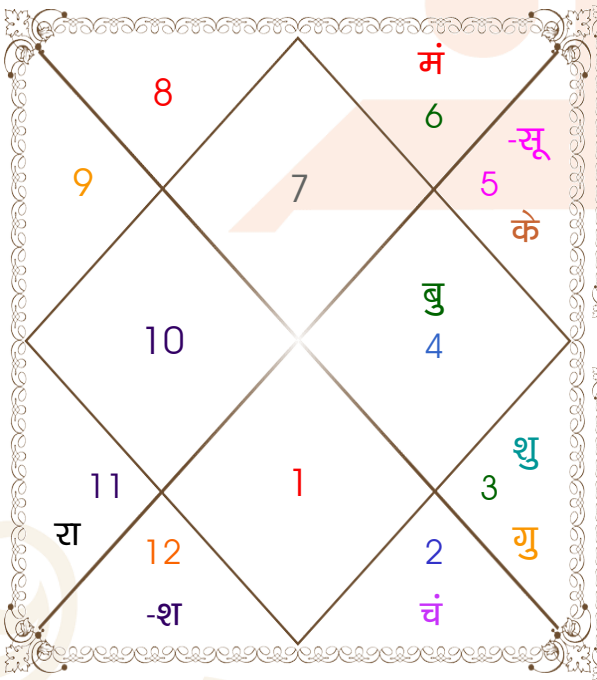

चन्द्र कुंडली

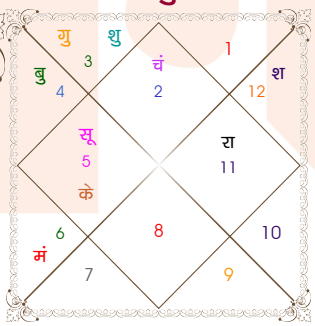

नवमांश कुंडली

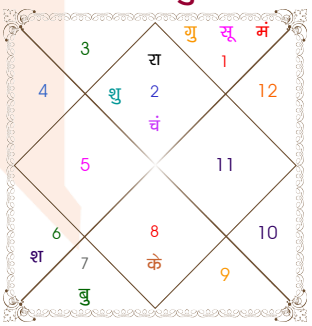

सर्वाष्टकवर्ग

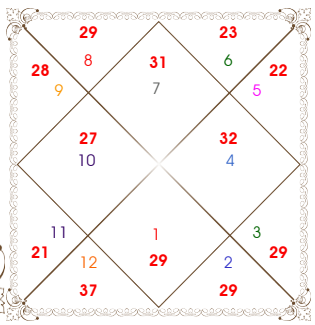

दशमांश कुंडली

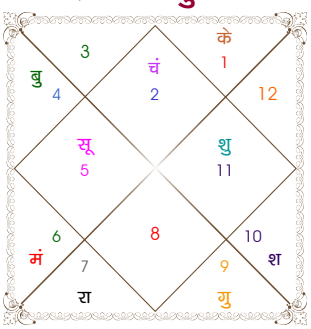

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

नक्षत्रफल

आप रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आप की जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र है। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाडी अन्त्य, योनि सर्प, वर्ण वैश्य, गण मनुष्य तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आद्याक्षर व या ब होगा। यथा वनिता, बबली आदि।

आप स्वभाव से ही आस्तिक विचारों वाली महिला होंगी। भगवान के ऊपर आप पूरा विश्वास रखेंगी। समस्त धर्म संवधी कार्यो की आपको जानकारी रहेगी। आप देखने में सुन्दर दर्शनीय तथा सुस्वभाव वाली होगी। वाक् शक्ति आपकी अत्यन्त ही सक्रिय रहेगी। किसी भी बात का तत्काल शुद्ध उत्तर देना आपके बाँए हाथ का खेल होगा। आप सुबुद्धि वाली होंगी तथा गूढ़ से गूढ़ विषय को आसानी से समझाने की कला में दक्ष होंगी।

धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारूशीलः विलसत्कलवेरः।
वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

आप धनाभाव के बिना जीवन पर्यन्त समस्त सुखों का उपभोग करेंगी तथा हमेशा आनन्दित रहेंगी। आप कृतज्ञ होंगी। अर्थात् अन्य जनों द्वारा अपने ऊपर किए गये उपकारों को मानेंगी। यदि कोई आपके लिए थोड़ा सा भी कार्य करता है। तो आप दिल से उसका आभार मानेंगी। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से आपको पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति होगी। आपकी वाणी अत्यन्त प्रिय एवं मधुर होगी। जो अन्य जनों को रूचिकर प्रतीत होगी। आप सत्य का अनुशरण करती हुई जीवन पथ पर सत्य बोलने के लिए प्रयत्न शील रहेंगी।

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
मान सागरी

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

सामान्य रूप से शारीरिक दृष्टि से आप निरोग रहेंगी। आप उत्साह से सम्पन्न महिला होंगी। अतः जो भी कार्य करेंगी उसे सोत्साह सम्पन्न करेंगी।

धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
जातक दीपिका

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

आप हमेशा शुद्धता की पक्षपाती रहेंगी चाहे वह शुद्धता शारीरिक हो चाहे आत्मिक। आत्मा को भी पवित्र रखने के लिए प्रयत्न शील रहेंगी। स्थिर बुद्धि की स्वामिनी होने के कारण आप जो कार्य करेंगी एकाग्र तथा दत्तचित्त होकर करेंगी। उसमें उतावली तथा शीघ्रता का प्रदर्शन नहीं करेंगी।

रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

आपका शरीर स्वस्थ होगा तथा दूसरे के दोष जानने में आप चतुर होंगी।

रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

आप जन्म के समय लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से युक्त रहता हैं। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति अत्यन्त ही शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी आयु पूर्ण आयु रहेगी तथा जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप यत्न पूर्वक सफल रहेंगी। साथ ही आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। लेकिन स्वास्थ्य से आप मध्यम रहेंगी एवं समय समय पर श्वास कफादि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगी। कुल मिलाकर आपका सामान्य जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

आपका जन्म वृष राशि में हुआ है। अतः आपका लालिमायुक्त गौरवर्ण तथा गाल स्थूल होंगे। आपकी आँखे देखने में बड़ी तथा मोटी होंगी। आपके स्वभाव में आलस्य का भी समावेश रहेगा। आप श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न लोगों के प्रति विशेष श्रद्धा तथा सेवा की भावना होगी। गुरू तथा ब्राहमणों से भी आपका विशेष श्रद्धा तथा आदर का भाव रहेगा। आपका स्वभाव वात तथा कफ का मिश्रण होगा। आप अपने समस्त कार्यों का संचालन बुद्धिमता पूर्ण ढंग से करेंगी। आपके बाल घने तथा घुँघराले होंगे। आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं दानशीलता की प्रवृति भी आपके अन्तर्मन में निहित होगी।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।

कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप आजीवन समस्त भौतिक सुखों का सानन्द उपयोग करेंगी तथा नित्य यथाशक्ति दानशीलता का भी परिचय देंगी। सफाई या शुद्धता की आप विशेष रूप से चिन्ता करेगी तथा इसे बनाये रखेंगी। अपने समस्त कार्यों को आप दक्षता से सम्पन्न करेंगी। धनार्जन आपके लिए पर्याप्त मात्रा में होगा। अतः आपकी विलासी प्रवृति हो जाएगी एवं विलासिता पर आप उनमुक्त भाव से व्यय करेंगी। आप तेजस्वी भी होंगी तथा आपके मित्र सदगुणों तथा सदाचार से युक्त होंगे। यह मित्रता आपकी चिर काल तक चलती रहेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपके चेहरे का आकार बड़ा तथा जानुभाग दीर्घ होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग कष्ट पूर्ण रहेंगे तथा अन्तिम दो भाग सुखपूर्वक व्यतीत होंगे। त्याग की भावना का समावेश भी आपके अन्तर्मन में रहेगा जिसका प्रर्दशन जीवन में उचित अवसरों पर करती रहेंगी। आप क्षमाशील प्रवृति की होंगी। तथा दंड की अपेक्षा क्षमाशीलता को प्राथमिकता देंगी। प्रारम्भिक अवस्था में आपको कष्ट भी अधिक सहने पडेंगे तथा परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा। आपके मुख पीठ तथा चेहरे पर तिल मस्से या व्रण का कोई भी चिह्न हो सकता है।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

सन्तति में आपकी पुत्रों की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक होगी। आपका आचरण तथा व्यवहार उत्तम एवं प्रशंसनीय होगा। समस्त धन एवं ऐश्वर्य का उपयोग करते हुए आपका यश दूर-दूर तक फैलेगा।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आपका वक्षस्थल विशाल तथा विकसित होगा। ज्ञान-अज्ञान, विवेक-अविवेक तथा अच्छे बुरे की आप पूर्ण रूप से ज्ञाता होंगी। अतः अविवेक पूर्ण कर्म नहीं करेंगी। आपकी चाल अत्यन्त सुन्दर एवं दर्शनीय होगी।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली

कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप देखने में सुन्दर होंगी तथा मुखाकृति थोड़ी विशाल होगी। आप कष्टों को सहने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही समृद्धि एवं अधिकारों से सम्पन्न महिला होंगी। जठराग्नि की प्रबलता आपके अन्दर विद्यमान रहेगी। पुरूष वर्ग में आप विशेष रूप से लोकप्रिय रहेंगी। आप युवा तथा वृद्धावस्था में सुखों को प्राप्त करेंगी। साथ ही आप सविलास गमन प्रिय भी होंगी। इसके अतिरिक्त आप सुन्दर स्वभाव वाली तथा विष्णु एवं शंकर भगवान की आराधना करने वाली होंगी।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आप मनुष्य गण में पैदा हुई हैं। अतः सामान्य रूप से आपकी प्रवृति धार्मिक होगी। ब्राहमण तथा देवताओं को आप आदर एवं पूजने योग्य समझेंगी। अभिमान का अंश भी आपके अन्दर विद्यमान रहेगा। आपका जीवन धनदौलत से परिपूर्ण रहेगा इसका आपको कभी भी अभाव महसूस नहीं होगा। दया तथा करूणा से आपका हृदय परिपूर्ण रहेगा। फलतः आप दीन दुःखियों की समय समय पर सेवा तथा सहायता करती रहेंगी। आप कई कलाओं के बारे में जानने वाली होंगी अर्थात् आप एक से अधिक कार्यों के बारे में ज्ञान रखेंगी। आप ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी पूर्ण रूप से इच्छुक रहेंगी। आपका शरीर कान्तियुक्त रहेगा तथा बहुत से लोगों को आप सुख देने वाली होंगी।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आप आजीवन मान सम्मान तथा धन से सुशोभित रहेंगी। आप एक अच्छी निशानेबाज भी बन सकती हैं। आप गौर वर्ण की तथा नगरवासियों को वश में करने वाली होंगी अर्थात् आप किसी नगर या समूह की सम्मानित महिला हो सकती हैं साथ ही आपकी आखें भी बडी-बडी होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी,

दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सर्पयोनि में उत्पन्न होने से कभी कभी आपके अन्दर क्रोध की मात्रा इतनी अधिक बढ जाएगी कि आपको स्वयं के बुरे भले का भी ध्यान नहीं रहेगा। साथ ही दया तथा करूणा की भावना की भी अल्पता रहेगी। आप दूसरे लोगों के द्वारा किए गए उपकार को भी यदा कदा कम मात्रा में भी स्वीकार करेंगी। प्रवृति आप की चंचल होगी तथा नाना प्रकार के स्वादों के आप रसिया होंगी स्वाद में परिवर्तन आपके लिए अत्यन्त आवश्यक होगा।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको सर्वप्रकार से वे आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उनके द्वारा आपको विशेष धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रहेगा एवं उनका कहना मानने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। उनकी सेवा करना तथा वांछित सहयोग प्रदान करना आप अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगी। आप के मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा फिर भी आपसी संबंध सामान्य ही समझें जाएंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का

स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य, पंचमी, दशमी पूर्णमासी तथा अमावस्या तिथियों में हस्त नक्षत्र, सुकर्मायोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि का ही योग बनेगा। साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इस समय पर शरीर की सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

यदि समयानुकूल न हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता का आभास हो रहा हो, व्यापार नौकरी या प्रोन्नति में हानि या बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय पर आपको सन्तोषी माता के व्रत रखने चाहिए तथा श्वेत वस्त्र, श्वेत मोती, श्वेत पुष्प, चावल, शहद, कपूर इत्यादि पदार्थों का दान भी करना चाहिए ऐसा करने से अशुभ फलों में कमी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप किसी योग्य विद्वान से करायेंगी तो उससे भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे तथा अशुभ फल न्यून होंगे। श्रद्धानुसार आप अपने इष्ट के रूप में भगवान विष्णु या शिव की आराधना भी कर सकती हैं।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।